Dr. Tapati Mukerji.
Asso Prof.
Music Dept. H.O.D
R. M. College Srs.

B.A Part IIIrd Hons. Paper V

The Place of Music in Fine Arts.
(ललित कलाओं में संगीत का स्थान).

हमारे संस्कृत वाङ्मय में पांच ललित कलाओं का वर्णन पाया जाता है जो इस प्रकार हैं — ① वास्तुकला, ② चित्रकला, ③ मूर्तिकला ④ काव्य कला तथा ⑤ संगीत कला इन पाँचों कलाओं में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण है।

① वास्तु कला के अन्तर्गत भवन अथवा देव मन्दिर का निर्माण आता है। किसी भी भवन को देखने से ही उस भवन के निर्माता अथवा उस भवन में रहने वाले व्यक्तियों के मनोवृत्ति का पता चल जाता है। प्रत्येक भवन अथवा देवमंदिर का सौन्दर्य पृथक पृथक होता है तथा उसके प्रति मानव का आकर्षण भी भिन्न भिन्न होता है। जिन कलाओं में सौन्दर्य और आकर्षण निहित है, उसको ललित कलाओं में गणना किया जाता है।

② चित्रकला में तूलिका के द्वारा कलाकार किसी वस्तु व्यक्ति या प्राकृतिक चित्र प्रस्तुत करता है। चित्रकला में कलाकारों के मनोभाव का प्रकाश पाया जाता है। चित्रकला का सौन्दर्य लौकिक सौन्दर्य से पृथक है, जो वस्तु देखने में सुन्दर लगती है वह सुन्दर और जो बुरी या भद्दी लगती है वह असुन्दर माना जाता है, चित्रकला का सौन्दर्य लौकिक और शाश्वत है। चित्रकला का सौन्दर्य वस्तु में नहीं बल्कि वस्तु के चित्रण पर है।

③ मूर्तिकला — मूर्तिकला भी एक ललित कला है, पत्थर मिट्टी या काष्ठ आदि प्राकृतिक उपकरणों के सहायता से जो आकृति निर्माण होता है, वह मूर्तिकला के नाम से जाना जाता है।